RESEARCH PAPER | Education | Volume : 6 | Issue : 5 | May 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

मूक बधिर व सामान्य–शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

KEYWORDS

डॉ. विष्णु कुमार

सहायक प्रोफेसर शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाड

ABSTRACT *Comparative study of the problems of the curriculum of the normal teaching students and deaf-dump students. This is the title of the dissertation. It is held on the R.E.A.D.S. and saint Wilfred T.T. college's students in Jaipur Raj. The number of the students is 40-40 (80). Self-made test is the medium of the test. Here research objectives are six and at last we know the conclusion that the normal students and deaf-dump students have a difference in their teaching. The difference is to much than Normal T.T. students because deaf-dump students are study with distance education and normal students done their regular study six hypothesis are in the dissertation deaf-dump students have a 47.92% problem in theoretical and practical curriculum and the normal T.T. students have 42.04% problem in the same matter, because Deaf-dump students have study in non-formal, education and normal T.T. student studies in formal education manner.*

प्रस्तावना :
शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालकों के ज्ञान, चरित्र और व्यवहार को एक विशेष ढांचे में ढाला जाता है, अर्थात् शिक्षा एक प्रकाश है जो जीवन के समस्त अन्धकार को दूर कर व्यक्ति के सामाजिक मूल्यों को जन्म देती है। शिक्षा वह साधन है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को संवारती है, निखारती है और प्रखर बनाती है शिक्षा मनुष्य के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितनी की उसकी मूलभूत (रोटी, कपड़ा, मकान) है जब मनुष्य को जन्म देने वाला एक ही ईश्वर है तो सभी को समानाधिकार प्राप्त है शिक्षा प्राप्त करने का। समाज का प्रत्येक प्राणी जन्म से मृत्यु तक अपनी सामार्थ्यानुसार सीखता है। परन्तु कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जिन्हें अपने जीवन को जीने में अनेक कठिनाईयां आती है। मूक–बधिर व्यक्ति भी उसी समाज का हिस्सा है। उन्हें भी वहीं अपनत्व व सहयोग की आवश्यकता महसूस होती है जो अन्य व्यक्तियों को भी होती है। जीवन का महत्वपूर्ण अंग है– शिक्षा, जैसे कहा भी गया है।

''विद्या विहीनः नरः पशुः समाना''

मूक बधिर विद्यार्थियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है क्योंकि शिक्षा ही इनके जीवन का सर्वांगीण विकास कर सकती है–

ष्कनबंजपवद पे तपहीजसल तमहंतकें जीम ामल जव दंजपवदंस चतवचमतजल ंदक ूमसंतिम ंदक पज पे वद वि जीम उवेज पउचवतजंदज दंजपवदंस उवअम. उमदजण्

शिक्षण में अध्यापक, छात्र एवं विवरण या पाठ्यक्रम का होना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से शिक्षण एक त्रि–ध्रुवीय प्रक्रिया है। शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए उन्हें भी शिक्षण प्रदान किया जाता है जिसे प्रशिक्षण की संज्ञा दी जाती है। प्रशिक्षण के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान व कौशल का उचित हस्तान्तरण, परिमार्जन तथा संगठन करने में सफलता प्राप्त होती है।

वैब्सटर्स डिक्शनरी के अनुसार – ''किसी व्यक्ति का एक के बाद दूसरे के द्वारा क्रम में अनुगमन करना प्रशिक्षण कहलाता है।''

अर्थात् प्रशिक्षण का तात्पर्य किसी व्यक्ति में आदत, विचार या व्यवहार का विकास करना है और इसके लिए पुनः अभ्यास अनुक्रम बारम्बारता आवश्यक है, तभी किसी कार्य में दक्षता, कुशलता अथवा निपुणता आती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रशिक्षित अध्यापकों और स्कूलों की आवश्यकता में वृद्धि हुई। पहले माध्यमिक स्तर पर मुश्किल से 5 प्रतिशत अध्यापक ही प्रशिक्षित होते थे। 1948 में राधाकृष्णन आयोग की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने सिफारिश दी कि शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय को पुनःरूपान्तरित किया जाए। प्रयोगात्मक व शिक्षण अभ्यास दोनों को समय दिया जाए। 1952 में मुदालियर आयोग की अध्यक्षता में शिक्षण–प्रशिक्षण में सुधार किये गए। 1964 में कोठारी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने व्यावसायिक शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था की कमियों को बताया, अन्ततः 1986 में घोषित नई शिक्षा नीति अध्यापक शिक्षा को एक सतत् प्रक्रिया में स्वीकार करते हुए सुधार लाने का संकल्प किया। इस नीति के सुझावों को ध्यान में रखते हुए 1973 में स्थापित छब्ज्म् को 73 में संविधान संशोधन द्वारा 1993 में संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। प्रत्येक शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय को छब्ज्म् से मान्यता प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया। शिक्षक शिक्षा में नवाचारों हेतु न्ळब् व छब्ज्म् द्वारा 2003 में पाठ्यचर्या का सृजन किया गया।

पाठ्यक्रम शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है। पाठ्यक्रम अंग्रेजी के कैरीकूलम का हिन्दी रूपान्तरण है। क्यूररे का अर्थ है– दौड़ का मैदान इसी से कैरीकूलम शब्द बना अर्थात् पाठ्यक्रम शब्द बना। पाठ्यक्रम शब्द दो शब्दों का संयोग हैं– पाठ्य+क्रम क्रमशः अर्थ है पढ़ना व व्यवस्थित रूप से अर्थात् पढ़ने की व्यवस्थित प्रक्रिया को पाठ्यक्रम कहते हैं।

पाठ्यक्रम का महत्व बताते हुए कनिघंम ने बताया है–

''पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है जिससे वह अपनी सामग्री (शिक्षार्थी) को अपने आदेश (उद्देश्य) के अनुसार अपनी चित्रकला (विद्यालय) में ढाल सके।

इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है चाहे वे सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थी हो या मूक–बधिर शिक्षण–प्रशिक्षणार्थी। लेकिन इनके पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के साथ–साथ इनकी पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना भी आवश्यक है।

अतः शोधकर्त्री ने पाठ्यक्रम का महत्व समझते हुए यह जानने का वैज्ञानिक प्रयास किया है कि मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएं कहा तक है।

समस्या का औचित्य :
किसी भी अध्ययन का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जा सकता है और इसी को आधार बनाते हुए शोधकर्त्री द्वारा लिया गया विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सटीक है, क्योंकि पाठ्यक्रम ही वह साधन है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने लक्ष्य व उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है। पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षा का शिक्षा के अभाव में पाठ्यक्रम का कोई महत्व नहीं है क्योंकि पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन सामग्री नहीं होगी तो कैसे शिक्षा प्राप्त की जा सकेगी। जैसा कि कोठारी आयोग ने कहा है कि भारत का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। तो सर्वप्रथम उन कक्षाओं की नीव मजबूत करने के लिए पहले उसके निर्माताओं (प्रशिक्षणार्थियों) की नीवं मजबूत करनी होगी और वह तभी होगा जब उनका पाठ्यक्रम वैज्ञानिक ढंग से निर्मित किया जायेगा।
चूंकि मूक–बधिर समाज का एक अभिन्न अंग है इसलिए मूक बधिर व सामान्य दोनों प्रशिक्षणार्थियों के पाठ्यक्रम का अध्ययन करना आवश्यक हैं लेकिन साथ ही केवल एक ही पक्ष (अध्ययन) ही महत्वपूर्ण नहीं है, अपितु दूसरा पक्ष (समस्याएं)

Volume : 6 | Issue : 5 | May 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

भी महत्वपूर्ण है, अतः उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए चयनित समस्या का औचित्य सारगर्भित है।

समस्या कथन :

''मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य :

1. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

2. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र प्रथम पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

3. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र द्वितीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

4. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र तृतीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

5. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के विभिन्न कौशलों के प्रयोगों सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

6. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रायोगिक गतिविधियों सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं :

1. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र प्रथम पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

2. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र द्वितीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

3. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र तृतीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

4. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के विभिन्न कौशलों के प्रयोगों सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

5. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रायोगिक गतिविधियों सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

6. मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की सैद्धान्तिक (प्रथम, द्वितीय व तृतीय) पाठ्यक्रम व प्रायोगिक (कौशल, गतिविधि) पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

न्यादर्श :

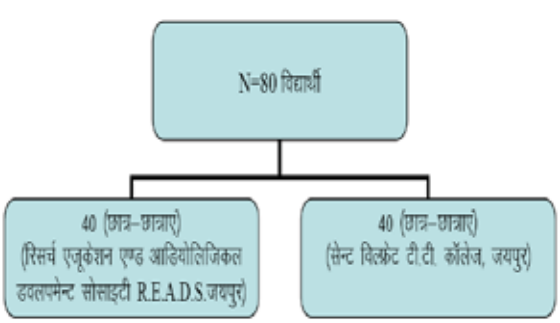

शोध में प्रयुक्त चर :

1. स्वतन्त्र चर – मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थी

2. आश्रित चर – पाठ्यक्रम

उपकरण : स्वनिर्मित प्रश्नावली

शोध विधि : सर्वेक्षण विधि

सांख्यिकी विधि :

प्रस्तुत शोध में प्रतिशत के आधार पर निष्कर्ष ज्ञात किए गए हैं।

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{कुल अंक}} \times 100$$

उदाहरणार्थ–

$$\frac{\text{मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों की प्रथम प्रश्न पत्र संबंधी सहमत कथन}}{\text{कथनों की संख्या}} \times 100$$

शोध की परिसीमाएं :

1. प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान के जयपुर जिले तक सीमित है।

2. प्रस्तुत शोधकार्य जयपुर के 'रिसर्च' एजूकेशन एण्ड आडियोलाजिकल डवलपम.`न्ट सोसाइटी ;त्म्ग्।क्ैद्ध, त्रिवेणी एवम 'सेन्ट विल्फ्रेड टी.टी. कॉलेज, मानसरोवर जयपुर तक सीमित है।

शोध के उद्देश्यों के आधार पर निष्कर्ष :

1. निष्कर्ष : मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की समान पाठ्यक्रम यथा –प्रथम प्रश्नपत्र, द्वितीय प्रश्न पत्र, तृतीय प्रश्न–पत्र की समस्याओं का अध्ययन किया गया, और अध्ययनोपरान्त समस्याओं में अन्तर पाया गया, कि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षाकृत मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों में पाठ्यक्रम सम्मबंधी समस्याये अधिक है क्योंकि मूक–बधिर प्रशिक्षणार्थियों अनौपचारिक अध्ययन करते हैं। जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थी औपचारिक अध्ययन करते हैं।

2. निष्कर्ष : मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र प्रथम – शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज में पाठ्यक्रम समस्याओं का अध्ययन करने के लिए निम्न कथन उल्लेखित किए गये है, यथा– शिक्षा का सम्प्रत्यय, आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, जैन धर्म, बौद्धधर्म, गीता दर्शन, रवीन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी, भारतीय संविधान उपव्यवस्था रूप में शिक्षा। इनके अध्ययन से ज्ञात हुआ कि मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों को औसत रूप से ज्यादा समस्याएं आती है जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को नहीं आती है, क्योंकि सामान्य प्रशिक्षणार्थी अध्यापक द्वारा अध्ययन कराये गये विषय वस्तु से अध्ययन करते है जबकि मूक–बधिर प्रशिक्षणार्थी भेजी गयी अध्ययन सामग्री से अध्ययन करते है।

3. निष्कर्ष : मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र द्वितीय –शिक्षण व अधिगम के मनोसामाजिक आधार में पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने के लिए दोनों के द्वितीय प्रश्न पत्र के पाठ्यक्रम का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया, फिर समान तथ्यों को लेकर उनसे सम्बन्धित समस्याओं पर अभिमत प्राप्त किये गये, जिससे ज्ञात हुआ कि दोनों की समस्याओं में अन्तर है क्योंकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सिद्धान्तों को अध्यापक द्वारा स्पष्ट किया जाता है जबकि मूक–बधिर प्रशिक्षणार्थी को स्वयं अपनी अधिगम प्रेरणा के आधार पर शिक्षण करना होता है।

4. निष्कर्ष : मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र तृतीय –शैक्षिक प्रबन्ध एवं विद्यालय संगठन में पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन करने के लिए जिन इकाईयों व उपइकाइयों की विवेचना की गई है उससे ज्ञात होता है कि इस प्रश्न–पत्र में मूक बधिर व सामान्य प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं में ज्यादा अन्तर नहीं है क्योंकि यह प्रश्न–पत्र प्रशासन व प्रबन्धन पर आधारित है और जब एक प्रशिक्षणार्थी भविष्य में भावी सफल अध्यापक बनने की सोचना है तो वह स्वयं ही इस क्षेत्र में अधिक सजग रहता है और इसी सजगता स्वरूप उन्हें इस प्रश्न–पत्र में कम समस्याएं आयी है।

5. निष्कर्ष : मूक बधिर व सामान्य प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के विभिन्न कौशलों के प्रयोगों सम्बन्धी समस्याओं में यथा– प्रस्तावना कौशल, खोजपूर्ण कौशल, व व्याख्यान कौशल, दृष्टान्त कौशल, प्रदर्शन कौशल इत्यादि का अध्ययन किया गया जिससे ज्ञात हुआ कि मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों को सामान्य प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षाकृत ज्यादा समस्या आयी है क्योंकि मूक–बधिर प्रशिक्षणार्थियों का इन कौशलों का प्रयोग करने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को पर्याप्त समय मिलता है।

6. निष्कर्ष : मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायागिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रायोगिक गतिविधियों का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ है कि दोनों की समस्याओं में अन्तर नहीं पाया गया है क्योंकि दोनों ही प्रशिक्षणार्थियों की ये गतिविधियां समान है उनके शिक्षण विषय व शिक्षण व शिक्षण गतिविधियों में असमानताएं नहीं है जबकि मूक–बधिर प्रशिक्षणार्थियों को अभ्यास कार्यक्रम मूक–बधिर विद्यार्थियों के साथ करना होता है, लेकिन उनका समायोजन उच्च स्तर का होता है।

Volume : 6 | Issue : 5 | May 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

सारणी–1
परिकल्पना के आधार पर निष्कर्ष :
परिकल्पना–1 मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र प्रथम पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

कथन	मूक बधिर षिक्षण प्रषिक्षणार्थी				सामान्य षिक्षण प्रषिक्षणार्थी			
	हा¡		नहीं		हा¡		नहीं	
1- षिक्षा का सम्प्रत्यय	24	60 %	16	40%	21	52.5%	19	47.5%
2- आदर्षवाद	19	47.5%	21	52.5%	25	62.5%	15	37.5%
3- प्रकृतिवाद	21	52.5%	19	47.5%	23	57.5%	17	42.5%
4- प्रयोजनवाद	21	52.5%	19	47.5%	15	37.55%	25	62.5%
5- जैन धर्म	20	50%	20	50%	12	30%	28	70%
6- बौद्ध धर्म	19	47.5%	21	52.5%	22	55.5%	18	45.5%
7- गीता दर्षन	19	47.5%	21	52.5%	19	55.5%	21	52.5%
8- रवीन्द्र नाथ टैगोर	20	50%	20	50%	18	45.5%	22	55.5%
9- महात्मा गांधी	20	50%	20	50%	16	40%	24	60%
10- अरविन्द घोश	24	60%	16	40%	15	37.5%	25	62.5%
11- भारतीय संविधान	24	60%	16	40%	21	52.5%	19	47.5%
12- उपव्यवस्था रूप में षिक्षा	25	62.5%	15	37.5%	11	27.5%	29	72.5%
13- उदीयमान भारतीय विशय	25	62.5%	15	37.5%	7	17.5%	33	82.5%
		54.04%		45.96%		43.35%		56.65%

मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न–पत्र प्रथम के पाठ्यक्रम में औसत रूप में 54ण्04ः समस्याएं आती है। जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को 43ण्35ः समस्या आती है। इससे यह ज्ञात होता कि दोनों की समस्याओं में अन्तर है। क्योंकि मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन क्षेत्र अनौपचारिक है, जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन क्षेत्र औपचारिक है और इसके साथ ही एक और बात है कि मूक बधिर की प्रश्न पत्र प्रथम की पाठ्यक्रम सामग्री सामान्य प्रशिक्षणार्थियों के पाठ्यक्रम की अपेक्षाकृत अधिक है।

सारणी–2
परिकल्पना–2 मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र द्वितीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

कथन	मूक बधिर षिक्षण प्रषिक्षणार्थी				सामान्य षिक्षण प्रषिक्षणार्थी			
	हा¡		नहीं		हा¡		नहीं	
1- षिक्षा मनोविज्ञान की अवधारणा	21	52.5%	19	47.5%	17	42.5%	23	57.5%
2- अधिगमकर्ता की वृद्धि	22	55%	18	45%	19	47.5%	21	52.5%
3- प्रयत्न व भूल का सिद्धान्त	24	60%	16	40%	19	47.5%	21	52.5%
4- षास्त्रीय अनुक्रिया का सिद्धान्त	20	50%	20	50%	23	57.5%	17	42.5%
5- क्रिया प्रसुत का सिद्धान्त	20	50%	20	50%	18	45%	22	55%
6- गेस्टास्ट सिद्धान्त	19	47.5%	21	52.5%	24	60%	16	40%
7- प्याजे व ब्रूनर सिद्धान्त	21	52.5%	19	47.5%	19	47.5%	21	52.5%
8- अभिप्रेरणा	20	50%	20	50%	17	42.5%	23	57.5%
9- व्यक्तित्व	20	50%	20	50%	17	42.5%	23	57.5%
10- बुद्धि	19	47.5%	21	52%	18	45%	22	55%
11- सृजनात्मकता	22	55%	18	45%	19	47.5%	21	52.5%
12- समायोजन	23	57.5%	17	42.5%	21	52.5%	19	47.5%
13- व्यक्तिगत विभिन्नता	23	57.5%	17	42.5%	22	55%	18	45%
14- समूह गत्यात्मकता	24	60 %	16	40%	21	52.5%	19	47.5%
15- बान्डुरा	22	55%	18	45%	18	45%	22	22%
		53.33%		46.67%		48.06%		51.04%

मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र द्वितीय पाठ्यक्रम में 55ण्33ः समस्याएं आती है, जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को 48ण्06ः समस्याएं आती है। अतः यह कह सकते हैं कि दोनों की समस्याओं में अन्तर है। क्योंकि मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन नियमित नहीं है।

सारणी–3
परिकल्पना–3 मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रश्न पत्र तृतीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

Volume : 6 | Issue : 5 | May 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

कथन	मूक बधिर षिक्षण प्रषिक्षणार्थी				सामान्य षिक्षण प्रषिक्षणार्थी			
	हा¡		नहीं		हा¡		नहीं	
1. षैक्षिक प्रषासन	20	50%	20	50%	16	40%	24	60%
2. सत्ता व आदेष	18	45%	22	55%	21	52.2%	19	47.5%
3. Tqm	19	47.5%	21	52.5%	19	47.5%	21	52.5%
4. संस्थागत नियोजन	17	42.5%	23	57.5%	19	47.5%	21	52.5%
5. विद्यालय बजट	17	42.5%	23	57.5%	14	35%	26	65%
6. पर्यवेक्षण	13	32.5%	27	67.5%	18	45%	22	55%
7. पाठ्यसहगामी क्रियाएं	19	47.5%	21	52.5%	17	42.5%	23	57.5%
8. स्वतन्त्रता पूर्व षिक्षा	16	40%	24	60%	11	27.5%	29	72.5%
9. स्वातन्त्रता के पष्चात षिक्षा का विकास	19	47.5%	21	52.5%	13	32.5%	27	67.5%
10. उभरती हुई भारतीय षिक्षा	18	45%	22	55%	18	45%	22	55%
11. NCTE	19	47.5%	21	52.5%	23	57.5%	17	42.5%
12. DIET	22	55%	18	45%	13	57.5%	17	42.5%
		45.21%		54.79%		44.05%		55.83%

मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों को प्रश्न–पत्र तृतीय में 45ण्21: समस्याएं आती है, जबकि सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को 44ण्05: समस्याएं आती है, इससे ज्ञात होता है कि दोनों की समस्याओं में अन्तर तो है, लेकिन औसतन ज्यादा अन्तर नहीं हे। क्योंकि यह प्रश्न–पत्र विद्यार्थियों की रूचि का प्रश्न पत्र है उन्हें शैक्षिक प्रशासन, ज्ड्ड, विद्यालय बजट, स्वतन्त्रता पूर्व शिक्षा, स्वातन्त्रयोत्तर शिक्षा विकास, छब्ज् एवं क्म्ज् आदि विषय–वस्तु का अध्ययन करने की जिज्ञासा है इसलिए इस प्रश्न पत्र में मूक बधिर व सामान्य प्रशिक्षण ार्थियों की समस्याओं में ज्यादा अन्तर देखने को नहीं मिला है।

सारणी–4

परिकल्पना–4 मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के विभिन्न कौशलों के प्रयोगों सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

कथन	मूक बधिर षिक्षण प्रषिक्षणार्थी				सामान्य षिक्षण प्रषिक्षणार्थी			
	हा¡		नहीं		हा¡		नहीं	
1. प्रस्तावना कौषल	22	55%	18	45%	16	40%	24	60%
2. प्रष्न कौषल	15	37.5%	25	62.5%	13	32.5%	27	67.5%
3. खोज पूर्ण कौषल	15	37.5%	25	62.5%	14	35%	26	65%
4. ष्यामपट्ट कौषल	18	45%	22	55%	14	35%	26	65%
5. व्याख्या कौषल	23	57.5%	17	42.5%	15	37.5%	25	62.5%
6. उद्दीपन कौषल	19	47.5%	21	52.5%	16	40%	24	60%
7. दृश्टान्त कौषल	18	45%	22	55%	13	32.5%	27	67%
8. प्रदर्षन कौषल	23	57.5%	17	42.5%	13	32.5%	27	67.5%
9. पुनर्बलन कौषल	21	52.5%	19	47.5%	6	40%	24	60%
10. व्याख्या कौषल	18	45%	22	55%	19	47.5%	21	52.5%
		48%		52%		37.25%		62.75

मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों की कौशल सम्बन्धी पाठ्यक्रम में 48: समस्याएं आती है, वहीं सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को 37ण्25: समस्याएं आती है, इससे विदित होता है कि दोनों की समस्याओं में अन्तर है, और वह इसलिए है क्योंकि मूक–बधिर प्रशिक्षणार्थियों को इन कौशलों का प्रयोग करने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है, जबकि सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों को सूक्ष्म–शिक्षण के माध्यम से इन कौशलों में दक्षता प्राप्त करायी जाती है। वे इन कौशलों का अध्ययन केवल सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं करते है अपितु व्यावहारिक रूप में भी करते हैं।

सारणी–5

परिकल्पना–5 मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रायोगिक गतिविधियों सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

कथन	मूक बधिर षिक्षण प्रषिक्षणार्थी				सामान्य षिक्षण प्रषिक्षणार्थी			
	हा¡		नहीं		हा¡		नहीं	
1. विशय–वस्तु विष्लेशण	18	45%	22	55%	14	35%	26	65%
2. सूक्ष्म–षिक्षण	13	32.5%	27	67.5%	16	40%	24	60%
3. सत्रीय कार्य	16	40%	24	60%	17	42.5%	23	57.5%
4. दैनिक पाठ योजना	10	25%	30	75%	18	45%	22	55%

Volume : 6 | Issue : 5 | May 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

5. इकाई पाठ योजना	19	47.5%	21	52.5%	16	40%	24	60%
6. समालोचनात्मक पाठ योजना	15	37.5%	25	62.5%	15	37.5%	25	62.5%
7. खण्ड–षिक्षण	14	35%	26	65%	13	32.5%	27	67.5%
8. समायोपयोगी उत्पादक कार्य	16	40%	24	60%	14	35%	26	65%
9. कम्प्यूटर के प्रायोगिक कार्य	15	37.5%	25	62.5%	14	35%	26	65%
10. वार्शिक पाठ योजना	20	50%	20	50%	19	47.5%	21	52.5%
		39%		61%		39%		61%

मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की प्रायोगिक गतिविधि के पाठ्यक्रम में समान रूप से 39: समस्याएं आती है, इसमें समस्याओं में अन्तर न होने का कारण प्रमुख यह है कि दोनों की प्रायोगिक क्रियाएं समान है, उनकी संख्या समान है जबकि मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों को तो अभ्यास कार्यक्रम मूक बधिर विद्यार्थियों में करने होते हैं। लेकिन उनका समायोजन इनके साथ परस्पर अच्छा होता है और सामान्य प्रशिक्षणार्थी सामान्य विद्यार्थियों में अभ्यास कार्यक्रम करना होता है इसलिए उन्हें भी अधिक समस्याएं नहीं आती है।

सारणी–6

परिकल्पना–6 मूक बधिर व सामान्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की सैद्धान्तिक (प्रथम, द्वितीय व तृतीय) पाठ्यक्रम व प्रायोगिक (कौशल, गतिविधि) पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर है।

Ø-la-	पाठ्यØe	मूक बधिर प्रषिक्षणार्थी		सामान्य प्रषिक्षणार्थी	
		हा¡	नहीं	हा¡	नहीं
	प्रष्न पत्र प्रथम	54.04%	45.96%	43.35%	56.65%
	प्रष्न पत्र द्वितीय	53.33%	46.67%	48.6%	51.04%
	प्रष्न पत्र तृतीय	45.21%	54.79%	44.17%	55.83%
	कौषल सम्बन्धी	48%	52%	37.25%	62.75%
	प्रायोगिक गतिविधियों सम्बन्धी	39%	61%	39%	61%
		47.92%	52.08%	42.04%	57.06%

मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों को 47ण्92: व सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को 42ण्04: समस्याएं आती है। अत: निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि इनकी समस्याओं में अन्तर पाया जाता है, क्योंकि जहां मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन क्षेत्र खुला विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है वही सामान्य प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन क्षेत्र नियमित है। मूक बधिर प्रशिक्षणार्थियों का मीडियत तो हिन्दी है, लेकिन विषय–वस्तु उनकी अंग्रेजी में है जिससे इन्हें पाठ्यक्रम के अध्ययन में समस्याएं आती है, वहीं सामान्य प्रशिक्षणार्थियों का मीडियम व विषय–वस्तु दोनों हिन्दी में है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारद्वाज, दिनेशचन्द्र (2005–06), बेसिक शिक्षा के सिद्धान्त, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
2. जोशी, मेहता, दिनेशचन्द्र व चतर सिंह (2007), शिक्षण प्रशिक्षण के सिद्धान्त और समस्याएं, जयपुर, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
3. पारीक, मथुरेश्वर, (1999), राजस्थान में शिक्षा, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
4. सिंह, अरूण कुमार, (2001), आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास
5. सरीन व सरीन (2008), शैक्षिक अनुसंधान विधियों, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
6. शर्मा, आर.ए., (2009), शिक्षा अनुसंधान, मेरठ लाल बुक डिपो
7. श्रीवास्तव, डी.एम., (2007), सांख्यिकी एवं मापन, आगरा, अग्रवाल, पब्लिकेशन
8. विष्ट सक्सेना, आमारानी व स्याति (2007–08), विशिष्ट बालक, आगरा, आगरा पब्लिकेशन।

पत्र–पत्रिकाएं :

1. सृजन (शोध विशेषांक) – केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर
2. भारतीय आधुनिक शिक्षा – एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, त्रैमासिक पत्रिका
3. शिविरा – अप्रेल–09, अंक – निदेशक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, बीकानेर, मासिक पत्रिका